आकार IAS

Shaping Your Dreams

संक्रामक एवं असंक्रामक रोग

मुख्य परीक्षा

प्रश्नपत्र-02 | भाग-02 | इकाई-05

प्रश्नपत्र-03 | इकाई-03 एवं 06

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र -02

भाग - 02

इकाई - 05

- संक्रामक और असंक्रामक बीमारियों के उपचार।

Part - 02

UNIT-05

- Remedies (Treatment and Cure) of communicable and non-communicable diseases.

प्रश्न पत्र -03

इकाई - 03

- स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं बीमारियाँ ।

UNIT-03

- Health and Hygienne and Diseases.

इकाई - 06

- संक्रामक रोग एवं उनकी रोकथाम।
- राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम।
- आयुष चिकित्सा पद्धतियाँ - आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्धा, होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों की प्रारंभिक जानकारी।
- केन्द्र एवं राज्य शासन की महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी कल्याणकारी योजनाएँ।
- केन्द्र एवं राज्य शासन के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संगठन।

UNIT-06

- Communicable diseases and their Prevention.
- National Vaccination Programme.
- Primary Knowledge of AYUSH - Ayurveda, Yoga, Unani, Siddha, Hemeopathy.
- Health Related Important Welfare Schemes of Central and State Government.
- Major Health Organizations of Central & the State Govenment.

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं बीमारियाँ	01-05
2.	संक्रामक रोग एवं उनकी रोकथाम	06-31
3.	राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम	32-38
4.	आयुष चिकित्सा पद्धतियाँ	39-47
5.	केन्द्र व राज्य सरकार की स्वास्थ्य संबंधी योजनाएं	48-66
6.	केन्द्र व राज्य सरकार के स्वास्थ्य संगठन	67-77

स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं बीमारियाँ
(Health, Hygiene and Disease)

- स्वास्थ्य
- स्वच्छता
  - मानव जीवन में स्वच्छता का महत्व
  - स्वच्छता के प्रकार
  - स्वच्छता प्रबंधन
  - भारत में स्वच्छता हेतु किये गये प्रयास
- बीमारियाँ
  - रोगों के प्रकार

स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं बीमारियाँ
(Health, Hygiene and Disease)

❒ स्वास्थ्य (Health)

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य सिर्फ रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नहीं है, बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली की स्थिति है।

अथवा

दैहिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णत: स्वस्थ्य होना ही स्वास्थ्य है।

अथवा

किसी व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से अच्छे होने की स्थिति स्वास्थ्य कहलाती है।

नोट – स्वास्थ्य के विस्तृत अध्ययन के लिए प्रश्न पत्र – 02, भाग – 02, इकाई – 05 का अवलोकन करें।

❒ स्वच्छता (Hygiene)

मानव जीवन के लिए स्वच्छता बहुत ही आवश्यक है। कई प्रकार की गंदगी तथा कचरे से अनेक प्रकार की बीमारियां होती हैं। गंदगी के कारण पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं कई प्रतिकूल दशाएं भी उत्पन्न हो जाती हैं। इन सभी प्रतिकूल दशाओं से बचने के लिए एवं इन बीमारियों को मिटाने तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु मानव के लिए स्वच्छता आवश्यक होती है।

''वे सभी प्रावधान जो मानव के मल-मूत्र एवं कचरे आदि का निस्तारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, यह प्रक्रिया स्वच्छता कहलाती है।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छता को कई प्रकार से परिभाषित किया गया है –

- लोगों को स्वच्छता के लिए शौचालयों का प्रयोग एवं दूषित पानी को स्वच्छ करने के साधनों व उपायों को करने की आवश्यकता है।
- स्वच्छता से सामान्य आशय उन प्रावधानों और सुविधाओं से है, जो मानव के मल-मूत्र और कचरे का सुरक्षित निस्तारण करते हैं।

❖ मानव जीवन में स्वच्छता का महत्व

मानव जीवन के मूल्यों में एक मूल्य स्वच्छ रहना भी आवश्यक है, क्योंकि स्वच्छता भारतीय संस्कृति का प्रतीत है। भारतीय दर्शन में शरीर, आत्मा, मन, बुद्धि तथा पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है। स्वच्छता पूर्ण रूप से एक बड़ा विचार है, वर्तमान में शहरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं ने कचरे की मात्रा को बढ़ावा दिया है। कचरे एवं गंदगी की समस्या वर्तमान समय की प्रमुख समस्या है।

- मानव के द्वारा स्वच्छता रखने से ही गंदगी का निस्तारण हो पाता है।
- अनेक प्रकार की बीमारियों व संक्रामक रोगों से मुक्ति मिल जाती है।
- स्वच्छता से हानिकारक कीट उत्पन्न नहीं होते हैं, जिससे बीमारियों के फैलने पर रोक लग जाती है।
- स्वच्छता के कारण मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे मानव की औसत आयु बढ़ती है।
- स्वच्छता से पर्यावरणीय दशाएं अनुकूल बनी रहती हैं।

❖ स्वच्छता के प्रकार

स्वच्छता की दशाओं को आधार मानकर स्वच्छता के निम्न प्रकार माने गये हैं –

1) **सामुदायिक स्वच्छता** – सामुदायिक स्वच्छता का संबंध ग्रामीण लोगों की सहज और लापरवाहीपूर्ण तरीके से खुले में मल त्याग की प्रक्रिया से है। सामुदायिक स्वच्छता के माध्यम से लोगों में खुले में मल त्याग को रोकने के लिए अनुदानित सुविधाओं से परिचय कराना है।
2) **शुष्क स्वच्छता** – शुष्क स्वच्छता से तात्पर्य शुष्क शौचालय, पेशाबघर आदि अतिरिक्त प्रयासों से है।
3) **पारिस्थितिकी स्वच्छता** – पारिस्थितिकी स्वच्छता सामान्य रूप से सुरक्षित कृषि उपायों और स्वच्छता से संबंधित है।
4) **पर्यावरणीय स्वच्छता** – बीमारियों से संबंधित पर्यावरणीय कारकों का नियंत्रण पर्यावरणीय स्वच्छता के घेरे में आता है। ठोस कचरा प्रबंधन, पानी और दूषित जल का उपचार, औद्योगिक कचरा उपचार इसी श्रेणी के लघु अंग हैं।
5) **स्वच्छता का अभाव** – इसका संबंध सामान्य रूप से शौचालय के अभाव से है। सामान्यत: स्वच्छता का अभाव खुले में मल-मूत्र त्याग और जन स्वास्थ्य विशेष से गंभीर संबंध रखता है।
6) **पुष्टिकारक स्वच्छता** – पुष्टिकारक स्वच्छता का क्षेत्र सम्पूर्ण स्वच्छता मूल्य श्रंखला है, जिसमें उपभोक्ता के अनुभव पर मल-मूत्र और दूषित जल के परिवहन, उपचार और पुन: उपयोग के तरीके सम्मिलित हैं। इससे पर्यावरणीय और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा होती है।

❖ स्वच्छता प्रबंधन

स्वच्छता और सफाई जीव जगत के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं, इस कारण से स्वच्छता का प्रबंधन करना बहुत ही आवश्यक होता है –

1) प्रदूषण के स्त्रोतों से दूरी बनाकर रखना चाहिए।
2) कार्यस्थलीय क्षेत्र को गंदगी से स्वच्छ रखना चाहिए।
3) प्रबंधन को आवश्यक है कि यह हानिकारक गैसों, अपशिष्टों के निपटान के लिए उचित संयत्र लगाये।
4) मल-मूत्र विसर्जन के लिए शौचालयों का प्रयोग करना चाहिए।
5) शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट जैसे – प्लास्टिक तथा खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग आदि का उचित निपटान करना।

❖ भारत में स्वच्छता हेतु किये गये प्रयास

● भारत में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम

यह कार्यक्रम भारत सरकार की **प्रथम पंचवर्षीय योजना** के रूप में **1954** में प्रारंभ किया गया था। 1981 की जनगणना के पश्चात 1981 से 1990 के दौरान पेयजल एवं स्वच्छता के लिए अंतर्राष्ट्रीय दशक में **ग्रामीण स्वच्छता** पर जोर देना शुरू किया गया। भारत सरकार ने वर्ष **1986** में केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम शुरू किया, जिसका उद्देश्य प्राथमिक रूप से ग्रामीण लोगों के जीवनस्तर में सुधार लाना तथा महिलाओं को निजता सम्मान प्रदान करना था। 1999 से सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अंतर्गत स्वच्छता सुविधाओं को माँग में सृजन में वृद्धि करने के लिए सूचना, शिक्षा और सम्प्रेषण, मानव संसाधन विकास तथा विकास की गतिविधियों पर अधिक बल दिया गया।

स्वच्छता पर जागरूकता सृजित करने के लिए प्रथम निर्मल ग्राम पुरस्कार **2005** में प्रदान किये गये, जिनमें पूर्ण स्वच्छता कवरेज और खुले में शौचमुक्त ग्राम पंचायतों की स्थिति तथा अन्य संकेतकों को प्राप्त करना सुनिश्चित करने हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर किये

गये प्रयासों एवं उपलब्धियों को मान्यता प्रदान की। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कवरेज की गति को तेज करने के लिए तथा नवीनीकृत कार्य नीतियों और स्वच्छता दृष्टिकोण के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को जागरूक करने के उद्देश्य से निर्मल-भारत अभियान की शुरूआत **1 अप्रैल, 2012** से की गयी।

- **स्वच्छ भारत मिशन**

सर्वव्यापी स्वच्छता कवरेज हासिल करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की। इस मिशन में दो घटक शामिल हैं - स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) तथा स्वच्छ भारत मिशन (शहरी)।

- **स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्य**
  - महात्मा गांधी की 150 वीं वर्षगांठ सही श्रृद्धांजलि प्रदान करने के रूप में 2019 तक स्वच्छ भारत की स्थिति प्राप्त करना।
  - स्वच्छता, साफ सफाई और खुले में शौच प्रथा समाप्त करने को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के सामान्य जीवनस्तर में सुधार लाना।
  - हर घर शौचालय का निर्माण, जल की आपूर्ति और ठोस व तरल कचरे का उचित तरीके से प्रबंधन करना है।
  - पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित एवं स्थायी स्वच्छता के लिए लागत प्रभावी और संगत प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना।

❒ बीमारियाँ या रोग

- **मानव रोग** - शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में किसी भी प्रकार के विकार को रोग कहते हैं, अर्थात् - अच्छे स्वास्थ्य में रुकावट उत्पन्न होना ही रोग है।
- **एन्डेमिक** - जब कोई रोग किसी विशेष क्षेत्र या जनसंख्या में स्थायी रूप से विद्यमान रहता है, तो ऐसी स्थिति एन्डेमिक कहलाती है।
- **एपिडेमिक** - जब कोई रोग किसी निश्चित जनसंख्या में कम समय में बड़ी तेजी के साथ फैलता है, तो यह स्थिति एपिडेमिक कहलाती है।
- **पेन्डेमिक** - एपिडेमिक स्थिति का सम्पूर्ण विश्व में विस्तार, अर्थात् - यदि कोई मानवीय रोग विश्व के वृहत क्षेत्र में फैलता है, तो यह स्थिति पेन्डेमिक कहलाती है।
- **औषधि विज्ञान का पिता** - रोगों के उपचार के लिए दवाओं का सर्वप्रथम प्रयोग हिप्पोक्रेट्स ने किया, इसलिए इन्हें चिकित्सा विज्ञान का पिता कहा जाता है।

स्वास्थ्य के अनुसार यदि कोई व्यक्ति शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में स्वस्थ होता है, तब ही उसे स्वस्थ्य माना जाएगा।

❒ रोग के प्रकार (Types of Disease)

रोग को उनकी प्रकृति तथा कारणों के आधार पर 2 वर्गों में विभक्त किया जाता है -

रोगों के प्रकार

- **जन्मजात रोग (Congenital Diseases)**
- **उपार्जित रोग (Acquired Diseases)**

❖ जन्मजात रोग (Congenital Diseases)

वे रोग जो जन्म से ही शरीर में होते हैं, उन्हें जन्मजात रोग (Congenital Diseases) कहते हैं। ये रोग उपापचयी गड़बड़ी या दोषपूर्ण शारीरिक विकास से उत्पन्न होते हैं। इन रोगों का आक्रमण गर्भावस्था के दौरान ही होता है। ओठ का कटना (Harelip), विदीर्ण तालु (Cleft Palate) और पांव का मुड़ा होना (Club Foot) आदि **जन्मजात रोग** (Congenital Diseases) के उदाहरण हैं। जन्मजात रोग निषेचित अण्डाणु की गुणसूत्रीय संरचना में कमी या गर्भाशय में स्थित शिशु पर आघात पहुंचने के कारण भी होते है।

❖ उपार्जित रोग (Acquired Diseases)

वे रोग जो जन्म के पश्चात् विभिन्न कारकों के कारण उत्पन्न होते हैं, उन्हें **उपार्जित रोग** (Acquired Disease) कहते हैं। उपार्जित रोग निम्नलिखित प्रकार के होते हैं –

1) **संक्रामक या संचरणीय रोग (Communicable or Infectious Disease)** – यह हानिकारक सूक्ष्म जीवों जैसे – जीवाणु, विषाणु, कवक एवं प्रोटोजोआ आदि के कारण उत्पन्न होते हैं। इन रोगाणुओं का संचरण वायु, जल, भोजन, रोगवाहक कीट तथा शारीरिक संपर्क के द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में होता है, इसीलिए इन्हें **संक्रामक या संचरणीय रोग** कहते हैं।

2) **असंक्रामक या असंचरणीय रोग (Non-communicable or Non-Infectious Disease)** – जो रोग संक्रमित व्यक्ति (रोगी) से स्वस्थ व्यक्ति को स्थानांतरित नहीं होता, उन्हें **असंक्रामक या असंचरणीय रोग** कहते हैं। मधुमेह, जोड़ों का दर्द, कैंसर, हृदय रोग आदि इसके कुछ उदाहरण है।

3) **न्यूनता/हीनताजन्य रोग (Deficiency Disease)** – ये रोग कुछ पोषक पदार्थों या विटामिन की कमी के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसे – स्कर्वी रोग, बेरी-बेरी रोग आदि।

संक्रामक रोग एवं उनकी रोकथाम
(Communicable diseases and their Prevention)

- संक्रामक रोग
  - जीवाणु जनित रोग
  - विषाणु जनित रोग
  - प्रोटोजोआ जनित रोग
  - कृमि जनित रोग
  - कवक जनित रोग
- असंक्रामक रोग
  - प्रदूषण जनित रोग
  - आनुवांशिक रोग
- अभ्यास प्रश्न